# विश्व न्याय मंदिर

27 दिसम्बर, 2005

महाद्वीपीय सलाहकार मण्डलों के सम्मेलन को सम्बोधित

परमप्रिय मित्रगण,

पिछले साढ़े चार वर्षों के दौरान, जब दुनिया भर में अनुयायियों ने समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकार किये जाने के लक्ष्य को गति देने के लिये अपने प्रयास जारी रखे हैं, इस बढ़ती से स्पष्ट हुआ है कि वर्तमान पाँच वर्षीय योजना का समापन उस ऐतिहासिक उद्यम के प्रकटीकरण के एक निर्णायक पल का सूचक होगा जिस पर सर्वमहान नाम के समुदाय ने आरोहण किया है। दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में बहाउल्लाह के प्रकटीकरण की चेतना को प्रदान करने के लिए आवश्यक संगठित प्रयासों के तत्व, पहल के एक ऐसे ढाँचे के रूप में उभर कर सामने आया है जिसे अब उपयोग में लाया जाना भर ही बाकी है।

26 दिसम्बर 1995 का हमारा संदेश, जिसमें बहाई विश्व का ध्यान प्रभुधर्म के सतत् और शीघ्र विकास से सम्बन्धित सघन ज्ञान प्राप्त करने के पथ पर केन्द्रित किया गया था, सामान्य तौर पर वैसे कार्यों का वर्णन करता है जिन्हें राह में आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिये लागू किया जाना चाहिए। इस राह पर पहला कदम था प्रशिक्षण संस्थानों के एक नेटवर्क के जरिये प्रभुधर्म के मानव संसाधनों को विकसित किये जाने के अपने प्रयासों को प्रणालीबद्ध किया जाना। इस आवश्यक कार्य को करने के लिये, हालाँकि सभी राष्ट्रीय समुदायों ने संस्थागत क्षमता के निर्माण की दिशा में कदम उठाये, फिर भी पाँच वर्षीय योजना के आरम्भ में ही प्रशिक्षण के एक सुविचारित कार्यक्रम के महत्व को व्यापक रूप से समझा जा सका। क्लस्टरों की अवधारणा के परिचय से मित्रों के लिये समुदाय के त्वरित विकास के बारे में एक नियन्त्रणीय अनुपात में सोच पाना सम्भव हो पाया और इसे दो परस्पर पूरक और एक-दूसरे को प्रबलित करने वाले गतिमानों के रूप में समझ सके: संस्थान पाठ्यक्रमों की कड़ी से होकर लोगों का सतत् प्रवाह और विकास के एक चरण से दूसरे चरण तक क्लस्टरों का बढ़ना। इस छवि से अनुयायियों को कार्य के क्षेत्र में पायी गयी सीख का विश्लेषण करने और अपने निष्कर्षों को स्पष्टतापूर्वक प्रस्तुत करने के लिए समान शब्दावली को प्रयोग में लाने की सहायता मिली। प्रसार और सुगठन की युगल प्रक्रियाओं पर समान रूप से बल देता गतिविधियों के पैटर्न की स्थापना के साधन को इससे पहले कभी इतने स्पष्ट रूप से नहीं समझा गया था। वास्तव में, विविध क्लस्टरों में इस समझ के आधार पर चलाये

गये विकास के सघन कार्यक्रमों का अनुभव इतना समानुरूप रहा है कि वाक्छल का कोई कारण नहीं रहता। आगे बढ़ने का रास्ता साफ़ है और रिज़वान 2006 में हम अनुयायियों का आह्वान इस बात के लिये करेंगे कि वे अपने इरादों को मजबूत करें और अपनी ऊर्जा की पूरी ताकत को निर्णायक रूप से निर्धारित किये जा चुके इस राह पर लगाएँ।

आने वाली पाँच वर्षीय योजना की विशेषताओं को, जो इस सम्मेलन में आपके परामर्श का विषय है, आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हम बहाई जगत की हाल की उपलब्धियों के रिकार्ड की समीक्षा करेंगे और यह निर्दिष्ट करेंगे कि वर्तमान पहल, विधि और उपकरणों को इस अगले चरण में किस प्रकार ले जाया जाये। इस विश्लेषण से जो प्रमाणित होगा वह यह कि व्यक्तिगत अनुयायी, समुदाय और संस्थाओं द्वारा पाँच साल पहले प्राप्त मार्गनिर्देश के प्रति एकनिष्ठ प्रतिउत्तर ने उनकी क्षमता को नये स्तरों तक पहुँचा दिया है। समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकार किये जाने की प्रक्रिया को गति देने के लक्ष्य के लिये -- जो रचनात्मक काल की पहली शताब्दी के अंतिम वर्षों तक बहाई विश्व के ध्यान का केन्द्र रहेगा, इस क्षमता का लगातार विकसित होते रहना आवश्यक है।

**व्यक्ति**

व्यक्तिगत अनुयायी द्वारा प्राप्त की गई उपलब्धियों की चर्चा विस्तार से करने की बहुत जरुरत नहीं है, क्योंकि विश्व के बहाईयों को सम्बोधित 17 जनवरी, 2003 के अपने संदेश में हम इसकी चर्चा कर चुके हैं। उस संदेश में हमने सभी जगह के अनुयायियों को विशिष्ट करने वाली बढ़ती हुई पहल करने का भाव और साधन-सम्पन्नता के साथ-साथ, साहस और शौर्य को रेखांकित किया था। समर्पण, उत्साह, आत्मविश्वास और दृढ़ता जैसे गुण उनकी आस्था की जीवन-शक्ति के प्रमाण हैं। उस जीवन-शक्ति का ठोस अभिव्यक्ति स्वरूप -- दुनिया भर में नज़र आ रहे बढ़ी हुई गतिविधियों को रेखांकित करने वाली उद्यमशीलता की भावना उत्पन्न करने में प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा अदा की गई भूमिका की पुष्टि भी हमने की है।

तब से हुए विकास ने सिलसिलेवार ऐसे पाठ्यक्रमों के प्रभाव को और स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया है, जिसका उद्देश्य पवित्र लेखों के गहन अध्ययन से प्राप्त आध्यात्मिक अन्तर्दृष्टि के उपयोग पर ध्यान केन्द्रित कर सेवा की क्षमता का निर्माण कराना है। प्रतिभागी ज्ञान के एक ऐसे भण्डार के सम्पर्क में आते हैं जो सम्बन्धित आदतों, अभिवृत्तियों और गुणों को धारण करने के लिये प्रोत्साहित करता है और सेवा के कार्यों को करने के लिये आवश्यक कार्यकुशलताओं तथा योग्यताओं को तीक्ष्ण करने में सहायक होता है। अध्ययनवृत्त कक्षा के धीर-गम्भीर और उल्लासित करने वाले वातावरण में रचनात्मक शब्द को लेकर की गई चर्चाएँ प्रभुधर्म के प्रति व्यक्ति के

दायित्वों के प्रति चेतना के स्तर को ऊँचा उठाती है और प्रभुधर्म का शिक्षण करने तथा इसके हितों के लिये कार्य करने के आनन्द के प्रति जागरूकता बढ़ाती है। वो आध्यात्मिक संदर्भ जिसके अन्तर्गत खास कार्यों को लिया गया है, इनके महत्व को बढ़ाता है। धैर्यपूर्वक आत्मविश्वास का निर्माण तब होता है जब मित्रगण प्रगतिशीलतापूर्वक, सेवा के और अधिक जटिल और कठिन कार्यों से जुड़ने लगते हैं। फिर भी, इन सब से ऊपर होता है ईश्वर पर भरोसा जो उन्हें उनके प्रयासों में लगाये रखता है। अनुयायियों के ऐसे अनेक विवरण उपलब्ध हैं जिनमें हिचकिचाते हुए वे शिक्षण के क्षेत्र में उतरे तो अपने को चारों ओर से सम्पुष्टियों द्वारा सहारा करते हुए पाया। अनुयायी जो कुछ सीख रहे हैं, उनके द्वारा उसे कार्यरूप देने का प्रयास करते हुए और इस प्रकार उनकी अपेक्षाओं से कहीं अधिक परिणामों की प्राप्ति करते हुए, एक नई दृष्टि से अपने समक्ष सम्भावनाओं और अवसरों को वे जब देखते हैं, तब ईश्वरीय सहायता की शक्ति की उन्हें प्रत्यक्ष अनुभूति होने लगती है। भगवद्वाणी के निकटीय सम्पर्क से उत्पन्न आस्था की चेतना का आत्मा पर ऐसा प्रभाव किसी भी रूप में एक नया तथ्य नहीं है। उत्साह की बात यह है कि संस्थान प्रक्रिया इतनी बड़ी संख्याओं में प्रभुधर्म की इस परिवर्तनकारी शक्ति की अनुभूति कराने में सहायक सिद्ध हो रही है। इसके शिक्षाप्रद प्रभाव को अगले पाँच सालों में लाखों और अधिक लोगों तक पहुँचाना सघन प्रयास का लक्ष्य होना चाहिये।

क्षमता-निर्माण पर बल देने का एक स्पष्ट परिणाम व्यक्तिगत पहल में सतत् बढ़ोत्तरी रहा है -- ऐसी पहल जो समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकार किये जाने की प्रक्रिया को गति देने के लिये आवश्यक प्रणालीबद्ध पहल की समझ द्वारा अनुशासित है। योजना द्वारा निर्धारित ढाँचे के अन्तर्गत प्रयास सीखने की विनम्र स्थिति के साथ बढ़ावा दिये जा रहे हैं। परिणाम स्वरूप, विविध प्रतिभाओं को अभिव्यक्त करने वाले गतिविधि, आगे कि ओर गतिशीलता में एक जुट हुए और पहल के प्रति व्यक्तिगत प्राथमिकताओं पर अन्तहीन विवाद से उत्पन्न गतिहीनता से बचा जाता है। लम्बी अवधी तक कार्य करने की प्रतिबद्धता बढ़ने लगती है जिससे किसी खास समय पर अनुयायियों द्वारा की गई पहल को संदर्भ प्राप्त होता है।

व्यक्तिगत पहल की वृद्धि के जितने स्पष्ट परिणाम शिक्षण के क्षेत्र में प्रदर्शित हुए उतने किसी अन्य क्षेत्र में प्रदर्शित नहीं हुए। चाहे ये अनौपचारिक बैठकों या अध्ययनवृत्त कक्षाओं के रूप में हो, प्रभुधर्म का संदेश देने के व्यक्तिगत प्रयास निर्विवादित रूप से बढ़ रहे हैं। प्रभावशाली और सबकी पहुँच में उपलब्ध कलाकौशल और विधियों द्वारा प्रदत्त होकर उनके प्रयासों को प्राप्त अनुक्रिया से प्रोत्साहित होकर अनुयायी विभिन्न वर्ग के लोगों के निकट सम्पर्क में आ रहे हैं और आध्यात्मिक महत्व के विषयों पर सम्वाद के प्रति उन्हें लगा रहे हैं। अधिकाधिक आध्यात्मिक बोध के साथ वे ग्रहणशीलता को महसूस कर पा रहे हैं और बहाउल्लाह के संदेश के जीवनदायी जल की प्यास को पहचान पाने में समर्थ हो रहे हैं। वे जिनके भी सम्पर्क में आते हैं -- पड़ोस के बच्चों के

माता-पिता, विद्यालय के सहपाठी, काम के सहकर्मी, आकस्मिक परिचितों -- वे ऐसी आत्माओं की खोज करते हैं जिनके साथ वे उसका एक भाग बांट सकें जिसे उस महान ने इतने अनुग्रहपूर्वक पूरी मानवजाति को प्रदान किया है। बढ़े हुए अनुभव उन्हें इस योग्य बनाते हैं कि अपनी प्रस्तुति को जिज्ञासुओं की आवश्यकता के अनुरूप ढालते हुए लोगों को प्रभुधर्म के निकट लाने तथा इसे स्वीकारने का निमंत्रण देने के लिए पावन लेखों पर आधारित शिक्षण की प्रत्यक्ष पद्धतियों को अपनाएँ।

इस संदर्भ में सर्वाधिक उल्लेखनीय अनुयायियों द्वारा की गई पहल का वह मनोभाव है जिसके द्वारा अपने प्रयासों के दायरे को इतना बढ़ाते हैं कि सेवा के पथ पर चलने की कोशिश में लगे हुए दूसरों की भी वे सहायता कर सकें। संस्थान पाठ्यक्रमों के सह-शिक्षकों के रूप में सेवा देने की क्षमता पा लेने के बाद, सेवा-कार्यों के प्रारम्भिक प्रयासों में लगे हुए प्रतिभागियों के साथ तब तक चलने की चुनौती को वे स्वीकार करते हैं जब तक वे भी अपनी अध्ययनवृत्त कक्षाओं की स्थापना नहीं कर देते और दूसरों को ऐसा करने में मदद नहीं करने लग जाते। संस्थान का प्रभाव इस प्रकार विस्तार पाता है और जिज्ञासु ईश्वर के शब्दों के सम्पर्क में आते हैं। संस्थान प्रक्रिया का यह विशेष पहलू, जो अपने-आप निरंतर तौर पर प्रभुधर्म के सक्रिय समर्थकों की संख्या में गुणनात्मक वृद्धि करता रहता है, अनेक प्रत्याशाएँ धारण करता है और हमें आशा है कि आने वाली योजना में इसकी क्षमता को साकार किया जायेगा। प्रभुधर्म के प्रत्येक शिक्षक की चर्चा करते हुए धर्मसंरक्षक कहते हैं, "उसे तब तक संतुष्ट नहीं होना चाहिये जब तक अपनी आध्यात्मिक संतान के अंदर वह एक इतनी गहरी ललक उत्पन्न न कर ले जिससे वह स्वतंत्र रूप से स्वयं ही उठ खड़े होकर दूसरी आत्माओं को जीवन प्रदान करने और अपनाये गये अपने इस नवीन धर्म द्वारा दिये गये विधानों और सिद्धान्तों का समर्थन करने न लग जाये।"

**समुदाय**

व्यक्तिगत अनुयायी को विशिष्ट बनाने वाली वह बढ़ी हुई जीवन-शक्ति समानरूप से बहाई सामुदायिक जीवन में परिलक्षित होती है। यह शक्ति किस हद तक अपने आपको प्रकट कर पाती है, निःसंदेह क्लस्टर के विकास के चरण पर निर्भर करती है। मित्रों द्वारा अभी भी योजना के प्रावधानों को कार्यरूप देने के संघर्ष में लगे हुए विकास की प्रारम्भिक अवस्था वाले क्लस्टर की तुलना में अधिक विकसित अवस्था वाला समुदाय-समूह, सम्भावित उपलब्धियों की कहीं अधिक गहन अन्तर्दृष्टि प्रस्तुत करता है। अतः, समुदाय की उपलब्धियों का विश्लेषण करते समय हमें इन अधिक विकसित क्लस्टरों की ओर इस बात के प्रति आश्वस्त होकर देखना चाहिये कि अपनी प्रगति के क्रम में उनके अनुभव का दूसरों द्वारा अनुकरण किया जायेगा।

अनेक अवसरों पर हमने उस परस्पर सम्बन्धित एकजुटता की चर्चा की है जो अध्ययनवृत्त कक्षाओं, भक्तिपरक बैठकों और बच्चों की कक्षाओं की स्थापना के ज़रिये विकास प्रक्रिया में प्राप्त करायी जाती है। प्रशिक्षण संस्थान से प्रेरित मूल गतिविधियों की सतत् गुणनात्मक वृद्धि, प्रसार और सुगठन की एक ऐसी बनाये रखी जा सकने वाली प्रतिकृति प्रस्तुत करती है जिसकी संरचना भी है और जो जैविक भी है। जैसे-जैसे जिज्ञासु इन गतिविधियों में शामिल होते हैं और अपनी आस्था व्यक्त करते हैं वैसे-वैसे व्यक्तिगत और सामूहिक शिक्षण के प्रयास गति पकड़ने लगते हैं। नये अनुयायियों के एक खास प्रतिशत को संस्थान पाठ्यक्रमों में नामांकन कराने के उद्देश्य से किये गये प्रयासों के ज़रिये प्रभुधर्म के कामों को करने वाले मानव संसाधनों की संख्या उमड़ने लगती है। जब किसी क्लस्टर में इस पहल को अनवरत रूप से बढ़ावा दिया जाता है तब ये सारी गतिविधियाँ अन्ततः विकास का सघन कार्यक्रम शुरू करने के लिये अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण करती हैं।

इस दहलीज पर स्थित क्लस्टरों के निकटीय परीक्षण पर इस बात की पुष्टि होती है कि अब तक प्राप्त परस्पर एकजुटता, सामुदायिक जीवन के विभिन्न पहलुओं तक विस्तार पाती है। प्रभुधर्म की शिक्षाओं का अध्ययन और उन्हें कार्यरूप देना व्यापक तौर पर एक आदत हो जाती है और भक्तिपरक बैठकों द्वारा उत्पन्न सामुदायिक आराधना की चेतना समुदाय के सामूहिक प्रयासों में व्याप्त हो जाती है। विविध गतिविधियों में कला का शालीनता के साथ समावेश अनुयायियों को सक्रिय बनाने वाली ऊर्जाओं के प्रवाह को बढ़ाते हैं। बच्चों और किशोरों की आध्यात्मिक शिक्षा के लिये आयोजित की जाने वाली कक्षाएँ स्थानीय लोगों के बीच प्रभुधर्म की जड़ों को मजबूत बनाती हैं। एक नये अनुयायी के घर जाने जैसी साधारण सेवा का कार्य भी, चाहे यह प्रशान्त द्वीपसमूहों के किसी गाँव में या फिर लंदन जैसे महानगर में किया जाये, मित्रभावना के उन बन्धनों को मजबूत करता है जिससे समुदाय के सदस्य एकसाथ बंधे होते हैं। अनुयायियों को प्रभुधर्म की मूल बातों से परिचित कराने के एक साधन के रूप में परिकल्पित, "गृहभ्रमण", व्यक्तिगत और सामूहिक, दोनों ही प्रकार वाले दृढ़ीकरण के विविध प्रयासों में वृद्धि हो रही है जिनमें मित्रगण पावन लेखों की गहराई में जाकर अपने जीवन पर पड़ने वाले उनके प्रभाव की खोज कर रहे हैं।

इस प्रकार जैसे-जैसे समुदाय का आध्यात्मिक आधार मजबूत हो रहा है वैसे-वैसे सामूहिक संवाद बढ़ता है, मित्रों के बीच सामाजिक सम्बन्धों में एक नया अर्थ प्राप्त होता है और उनकी पारस्परिक क्रियाएँ समान उद्देश्य की भावना से प्रेरित हो रही हैं। तब, इसमें कोई संदेह नहीं कि अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र द्वारा किया गया विश्लेषण यह दिखलाता है कि जिन पचास विकसित क्लस्टरों की समीक्षा की गयी वहाँ पाया गया कि उन्नीस दिवसीय सहभोज सभाओं की गुणवत्ता बढ़ी है। अन्य रिपोर्टों से पता चलता है कि कोष में दान की प्रवृत्ति बढ़ी है, क्योंकि इसके

आध्यात्मिक महत्व के प्रति चेतना का विस्तार हुआ है और भौतिक संसाधनों की जरुरत को बेहतर ढंग से समझा गया है। सामूहिक पहचान का निर्माण कराते हुए और सामूहिक इच्छा को बलवती बनाते हुए, क्लस्टर के स्तर पर समीक्षा बैठकें जरुरतों और योजनाओं पर विचार-विमर्श के मंच बन रही हैं। जहाँ ऐसे विकसित क्लस्टर फल-फूल रहे हैं, वहाँ वे अपनी सीमाओं से बाहर क्षेत्रीय कार्यक्रमों, मसलन ग्रीष्मकालीन और शीतकालीन शिविरों को भी समृद्ध बना रहे हैं।

व्यक्ति की ही तरह, समुदाय के विकास की वर्तमान अवस्था में भी सीखने की प्रवृत्ति इसका प्रमाण है। आप और आपके सहायकों से आग्रह है कि आने वाले सालों में आप यह सुनिश्चित करने का हर प्रयास करें कि एक के बाद एक क्लस्टर में सीखने का ताना-बाना निर्णय लेने की प्रक्रिया में बुना जा सके।

आपके प्राथमिक सरोकारों में एक होगा प्रणालीबद्ध कार्य के महत्व के प्रति उस समझ को बढ़ावा देना, जो अब तक प्राप्त सफलताओं के परिणामस्वरूप पहले से ही बढ़ा है। सम्भावनाओं और संसाधनों के वास्तविक मूल्याँकन पर आधारित विकास की एकरूप संकल्पना तक पहुँचना, ऐसी कार्यनीतियों का विकास करना जो इसे रूपरेखा प्रदान कर सके, क्षमता के अनुकूल कार्ययोजनाएँ तैयार करना और उन्हें लागू करना, निरन्तरता को बनाये रखते हुए आवश्यक समायोजन करना, प्राप्त उपलब्धियों पर आगे निर्माण करना -- प्रणालीबद्धता के ये कुछ आवश्यक तत्व हैं जिन्हें प्रत्येक समुदाय को अवश्य सीखना और आत्मसात करना चाहिये।

इसी संदर्भ में, सामुदायिक जीवन के कुछ पहलुओं को सर्वसाधारण के लिये खोलने की इच्छा और तत्परता को आचरण के ऐसे पैटर्न में समांकलन किया जाना चाहिए ताकि आत्माएँ आकर्षित और सम्पुष्ट हो सकें। जब मित्रों ने सामूहिक स्तर पर सोचने और कार्य करने की नई विधि अपनाई तो इस क्रम में बहुत कुछ हासिल किया गया। अपनी बांहों में बड़ी संख्या में लोगों का स्वागत करते हुए उनमें विद्यमान क्षमताओं को अधिक तत्परता के साथ देखना और पूर्वाधारित धारणाओं के आधार पर कृत्रिम अवरोधों से बचना समुदाय सीख रहा है। एक सम्पोषित करने वाला वातावरण को बढ़ावा मिल रहा है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति, अनुचित अपेक्षाओं के दबाव से मुक्त होकर अपनी गति से प्रगति करने के लिये प्रोत्साहित होता है। इन प्रगतियों के केन्द्र में प्रभुधर्म की सार्वभौमिकता और व्यापकता के आशयों के प्रति जागरूकता है। सामूहिक कार्य को अधिक-से-अधिक इस सिद्धान्त से मार्गदर्शन मिल रहा है कि बहाउल्लाह का संदेश मानवजाति को पूरी उदारता के साथ और बिना किसी शर्त के दिया जाना चाहिये। प्रभुधर्म की शिक्षाओं के साथ ग्रहणशील जनसमूहों तक पहुँचने के लिये किये जा रहे प्रयास सर्वाधिक प्रसन्नतादायक हैं। जैसे-जैसे सामाजिक और राजनीतिक ताकतें अविरत रूप से लोगों को उनके देशों से जड़ समेत

उखाड़कर अलग-अलग महाद्वीपों में प्रवाहित करती जा रही हैं, वैसे-वैसे पृष्ठभूमि की विविधता और इससे सम्पूर्ण को मिलने वाली ताकत के प्रति प्रशंसा, समुदाय के प्रसार और सुगठन के लिये महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

सम्भवतः जो काम आपका और आपके सहायकों के ध्यान को सर्वाधिक आकर्षित करेगा वह होगा समुदायों को अपनी एकाग्रता को बनाये रखने में सहायता करना। क्रमिक योजनाओं के ज़रिये धीरे-धीरे पाई गई यह योग्यता उसकी सर्वाधिक कीमती पूंजी में से एक का प्रतिनिधित्व करती है, जो मित्रों और उनकी संस्थाओं द्वारा समूहों में प्रभुधर्म को स्वीकार किये जाने को गति प्रदान करने के एकमात्र लक्ष्य को पाने की कोशिश को जारी रखना सीखा है अनुशासन, प्रतिबद्धता तथा दूरदर्शिता के सहारे मुश्किल से पाई गई है। एक ओर, एकाग्रता को बनाये रखने के नाम पर एकरूपता अथवा अनन्यता के प्रवृत्ति को हतोत्साहित करना आप आवश्यक पाएँगे। एकाग्रता बनाये रखने का अर्थ यह नहीं है कि विशेष जरुरतों और हितों को अनदेखा कर दिया जाये; या फिर अन्य गतिविधियों को स्थान देने के लिए आवश्यक गतिविधियाँ छोड़ दी जाती हैं। साफ़तौर पर, दशकों के दौरान आकार पाये ऐसे अनेक तत्व हैं जिनसे बहाई सामुदायिक जीवन बनता है, जिन्हें और अधिक परिष्कृत और विकसित किया जाना चाहिये। दूसरी ओर, कार्यों को प्राथमिकता के क्रम में बाधने के प्रति मनोवृत्ति को प्रबलित करने के हर अवसर का आप लाभ उठाना चाहेंगे -- एक ऐसी मनोवृत्ति जो इस बात को स्वीकारती हो कि विकास के एक खास चरण में सभी गतिविधियों का समान महत्व नहीं होता, कि कुछ कार्य ऐसे होते हैं जिन्हें अवश्य ही पहले किया जाना चाहिये, कि सर्वाधिक अच्छे इरादों से दिये गये प्रस्ताव एकाग्रता को भंग कर सकती है, शक्ति को नष्ट कर सकती है अथवा प्रगति को बाधित कर सकती है। साफ़तौर पर इसे समझ लिया जाना चाहिये कि मित्रों के लिये प्रत्येक समुदाय में प्रभुधर्म की सेवा करने का जो समय उपलब्ध है वह सीमाओं से रहित नहीं है। यह अपेक्षा किया जाना स्वाभाविक है कि इस सीमित संसाधन का अधिकांश भाग योजना के प्रावधानों की पूर्ति के लिए लगा दिया जायेगा।

**संस्थाएँ**

व्यक्ति अथवा समुदाय की किसी भी उपलब्धि को योजना के तीसरे प्रतिभागी -- प्रभुधर्म की संस्थाओं -- के मार्गनिर्देश, प्रोत्साहन और समर्थन के बिना सतत् बनाया नहीं रखा जा सकता था। यह देखकर प्रसन्नता होती है कि किस हद तक संस्थाएँ व्यक्तिगत पहल को बढ़ावा दे रही हैं, शिक्षण के क्षेत्र में शक्तियों को प्रवृत्त कर रही हैं, प्रणालीबद्ध कार्यप्रणाली को रेखांकित कर रही हैं, समुदाय के आध्यात्मिक जीवन को सम्पोषण प्रदान कर रही हैं और उनमें एक स्वागत करने वाला वातावरण को पोषित कर रही हैं। योजना के लक्ष्य पर एकाग्रचित बने रहने में समुदाय की

मदद करने के क्रम में, मित्रों के बीच संकल्पना की एकता बनाये रखने, उनके प्रयासों को संसाधन प्राप्त कराने हेतु आवश्यक संयंत्र उपलब्ध कराने और विवेकपूर्वक निर्धारित प्राथमिकताओं के आधार पर संसाधन उपलब्ध कराने के अर्थ के बारे में वे व्यावहारिक रूप से सीख रही हैं। इन प्राथमिकताओं में, कार्यक्रमों के संचालन के उन क्षेत्रों का निर्धारण करना निश्चित रूप से शामिल है जहाँ विशेष कार्यकुशलता वाले व्यक्तियों की जरुरत है। इस संदर्भ में, बाहरी मामलों के कार्यकलाप जिन्हें राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाएँ श्रमपूर्वक अंजाम दे रही हैं और सामाजिक तथा आर्थिक विकास की योजनाएँ जो, उदाहरणतया, बहाई प्रेरित संगठनों द्वारा चलाये जा रहे हैं, विशेषतौर पर उल्लेखनीय हैं। इस प्रकार की जरुरतों की ओर प्रवृत्त होते हुए संस्थाएँ अनुयायियों द्वारा योजना के प्रमुख दायित्वों के संचालन को दिशानिर्देश देने में अपने को अधिक से अधिक सक्षम पा रही हैं।

यह देखकर भी उत्साह बढ़ता है कि राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाएँ, सलाहकारों के सहयोग से, क्लस्टर के स्तर पर बड़े पैमाने पर हुए विकास से उत्पन्न प्रशासनिक चुनौतियों का सामना करने के लिए निश्चित कदम उठा रही हैं। जो योजनाएँ उभर रही हैं उनके अनुसार मुख्य श्रृंखला के पाठ्यक्रमों के संचालन तथा बच्चों और किशोरों के कार्यक्रमों से सम्बन्धित संयोजन के लिये एक अथवा अधिक लोगों को प्रशिक्षण संस्थान द्वारा नामित किया जा रहा है। क्षेत्रीय परिषद अथवा स्वयं राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा द्वारा नियुक्त की गई एक क्षेत्रीय शिक्षण समिति की भी जरुरत त्वरित प्रसार तथा सुगठन को पाने के लिये किये जाने वाले प्रणालीबद्ध प्रयासों के अन्य विभिन्न पहलुओं की देखरेख करने के लिए पड़ती है। सहायक मण्डल सदस्य दोनों मोर्चों पर काम करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि विकास की प्रक्रिया के सूचक स्वरूप दोनों गतिमान अबाधित रूप से आगे बढ़ते रहते हैं। एक के बाद-एक क्लस्टरों में जबकि ये विभिन्न घटक स्थापित किये जा रहे हैं, इनमें से प्रत्येक द्वारा किये जाने वाले कार्यों और इनके परस्पर सम्बन्धों के बारे में अभी भी बहुत कुछ सीखा जाना है। जो महत्वपूर्ण है वह यह कि लचीलेपन के वर्तमान स्तर के साथ, जो आवश्यकतानुसार नये संयंत्रों की स्थापना की अनुमति देता है, कोई समझौता नहीं किया जाये ताकि समन्वय की यह योजना स्वयं विकास की जरुरतों के प्रति अनुक्रिया का स्वरूप धारण किये रहे। सीखने की इस प्रक्रिया को दिशानिर्देश देने के लिये हम आपकी और राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं की ओर देखते हैं।

पूरी योजना के दौरान हमने बड़ी गहरी रुचि के साथ इन प्रक्रियाओं का स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के क्रियाकलापों पर पड़ने वाले प्रभाव का अवलोकन किया है। यह देखकर हमें खुशी होती है कि इससे सम्बन्धित दो प्रकार की प्रगति प्राप्त हो रही है। वैसे क्लस्टरों में जहाँ अधिकतर स्थानीय आध्यात्मिक सभाएँ अत्यन्त कमजोर रही हैं, अपने अधीन वाले क्षेत्रों में योजना

की विशेष गतिविधियों का दिशानिर्देश करना सीखते हुए उनमें से बढ़ती संख्या धीरे-धीरे अपने दायित्वों का भार उठाने लगी हैं। साथ ही, दीर्घावधि वाली स्थानीय आध्यात्मिक सभाएँ अतिरिक्त शक्ति के संकेतों का प्रदर्शन तब करने लगती हैं जब प्रणालीबद्ध विकास की संकल्पना का वे आलिंगन करती हैं -- ऐसा प्रायः समायोजन की उस अवधि के बाद होता है जिसमें क्लस्टर के स्तर पर उभरी नई वास्तविकताओं को समझने के लिये कुछ स्थानीय सभाएँ संघर्ष कर चुकी होती हैं।

यह देखकर हमें ख़ासतौर पर खुशी हुई है कि पूरी दुनिया में विकास की जो प्रक्रिया उभर कर सामने आ रही है वह शहरी और ग्रामीण, दोनों क्षेत्रों में गति पकड़ रही है। वर्तमान योजना के आरम्भिक काल में अनेक बड़े शहरों में जो कदम उठाया गया वह यह था कि उन्हें विभिन्न खण्डों में बांट दिया गया। सतत् विकास के योजना निर्माण के लिए यह महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। फिर भी, जैसे-जैसे समुदाय विस्तार पाते हैं, यह अपेक्षा करना अनुचित नहीं होगा कि शहरों को और भी छोटे क्षेत्रों में बांट दिये जाने की जरुरत होगी, जो सम्भवतः बंटते-बंटते अन्त में प्रतिवासों में विभाजित हो, जिनमें से प्रत्येक में उन्नीस दिवसीय सहभोज का आयोजन किया जाता हो। भविष्य के समुदाय की सम्भावित माप की संकल्पना धारण किये रहना स्थानीय सभाओं के भावी विकास के लिये आवश्यक है। उन समुदायों के गतिविधियों का संचालन करने के लिए जिनकी सदस्यता हजारों की संख्या में बढ़ जाएँगी तथा "मनुष्यों के बीच दयालु ईश्वर के विश्वासपात्र लोगों" के रूप में अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए, आने वाले सालों में उन्हें जो आध्यात्मिक सभाओं पर सेवा देते हैं, अनिवार्य रूप से सीखने के सघन अवधियों से होकर गुज़रना पड़ेगा। आने वाली योजना के दौरान हम स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के विकास का निकटीय तौर पर अनुसरण करेंगे। साथ ही, किसी स्थान पर जैसे-जैसे बहाई आबादी तथा अन्य परिस्थितियों की माँग होगी, वैसे-वैसे हर स्थिति पर अलग-अलग विचार करते हुए, धर्मसंरक्षक के शासनकाल के दौरान तेहरान में विकसित पैटर्न के आधार पर द्विस्तरीय चुनाव प्रक्रिया को हम प्राधिकृत करेंगे।

**विकास के सघन कार्यक्रम**

व्यक्ति, समुदाय और संस्थाओं द्वारा किसी क्लस्टर में संस्थान प्रक्रिया को तेज करने के लिये किया जाने वाला सतत् उद्यम, सुप्रमाणित उपायों के सहारे जबकि उसे विकास के एक पड़ाव से दूसरे की ओर गतिमान होने में योगदान करता है, वहीं वह विकास के सघन कार्यक्रम की स्थापना की पराकाष्ठा पर पहुंचाती है। वास्तव में वर्तमान योजना के दौरान कोई दो सौ क्लस्टरों में ऐसे कार्यक्रम शुरू किये जाने के परिणामस्वरूप सीखने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण प्रगति प्राप्त हुई। हमें विश्वास है कि इस सीख को प्रणालीबद्ध रूप से अब प्रत्येक महाद्वीप में विस्तार दिया जा

सकेगा और रिज़वान 2006 में हम दुनियाभर के बहाईयों का आह्वान करेंगे कि अगली योजना में कम-से-कम 1,500 क्लस्टरों में विकास के सघन कार्यक्रमों की स्थापना की जाये।

वर्तमान समझ के अनुसार, विकास का एक सघन कार्यक्रम अत्यन्त सीधा, सरल और प्रभावी होता है, लेकिन जिसका आशय मित्रों के संकल्प की परीक्षा लेता हुआ परिश्रम से है। पाँच साल पहले जो संकल्पना हमने प्रस्तुत की थी उससे उचित रूप से मेल खाते हुए इसमें कुछ ऐसे कार्य प्रयोग में लाये जाते हैं जो बड़े पैमाने पर प्रसार और सुगठन के लिये अपरिहार्य सिद्ध हुए हैं। इसमें सामान्य तौर पर तीन महीने की अवधि वाले गतिविधियों के चक्र होते हैं, जो विस्तार, सुगठन, समीक्षा और योजना-निर्माण के विभिन्न निश्चित चरणों के अनुरूप आगे बढ़ते हैं।

विस्तार का चरण, जो प्रायः दो सप्ताहों का होता है, सघनतम् प्रयासों की माँग करता है। इसका उद्देश्य वैसे लोगों के दायरे को बड़ा करना होता है जो प्रभुधर्म में रुचि रखते हैं, ग्रहणशील आत्माओं की पहचान करनी होती है और उनका शिक्षण करना होता है। हालाँकि इस चरण में प्रभुधर्म की उद्घोषणा से जुड़े कुछ तत्व शामिल हो सकते हैं, लेकिन इस उद्देश्य से आयोजित कुछ कार्यक्रमों का आयोजन करने या फिर केवल जानकारी प्रदान करने के लिए गतिविधि मात्र के समय के रूप में इसे नहीं देखा जाना चाहिए। अनुभव सुझाता है कि शिक्षण-पहलों और विधियों का जितना अधिक निकटीय तौर पर तालमेल संस्थान पाठ्यक्रमों के अध्ययन से प्राप्त क्षमता से होता है, उनके उतने ही लाभप्रद परिणाम रहते हैं।

इस चरण के लिये बनायी जा रही योजनाओं में, प्रायः शिक्षण- समूहों की प्रतिभागिता द्वारा ध्यान से अभिकल्पित शिक्षण परियोजनाओं और लोगों के घरों में जाने के अभियानों एवं अनौपचारिक बैठकों के आयोजन निरपवाद तौर पर शामिल होते हैं। फिर भी, विस्तार का उभरने वाला पैटर्न अलग-अलग क्लस्टरों में भिन्न होगा। जहाँ के जनसमूहों ने पारम्परिक रूप से प्रभुधर्म के प्रति उच्च स्तरीय ग्रहणशीलता दिखलायी है, वहाँ तेज़ी से नये अनुयायियों के अन्तर्वाह की अपेक्षा की जा सकती है। उदाहरण के लिये, इस प्रकार के एक क्लस्टर में, तीन सप्ताह के दौरान किसी स्थान पर पचास लोगों का नामांकन करने के लक्ष्य को दो दिनों में ही पार कर लिया गया और समूह ने समझदारी से निर्णय लिया कि विस्तार के चरण को वहीं समाप्त कर दिया जाये ताकि सुगठन से सम्बन्धि गतिविधि चलाई जा सके। इस अगले चरण के प्राथमिक उद्देश्यों में एक है नये अनुयायियों के एक खास प्रतिशत को संस्थान प्रक्रिया में प्रवेश दिलाना, ताकि विकास को बनाये रखने के लिये भविष्य में चलाये जाने वाले चक्रों के लिए पर्याप्त संख्या में मानव संसाधन उपलब्ध हों। जो अध्ययनवृत कक्षाओं में भाग नहीं लेते, ग्रह भ्रमणों द्वारा उनका सम्पोषण किया

जाता है और सब को भक्तिपरक बैठकों में, उन्नीस दिवसीय सहभोज में और पवित्र दिवस समारोहों में आमंत्रित किया जाता है तथा धीरे-धीरे उन्हें सामुदायिक जीवन के पैटर्नों से परिचित कराया जाता है। नये अनुयायियों के परिवार के सदस्य और मित्र जैसे-जैसे प्रभुधर्म को स्वीकार करते हैं, वैसे-वैसे सुगठन का चरण अतिरिक्त नामांकनों में बढ़ोत्तरी करता है।

अन्य क्लस्टरों में विस्तार के चरण में, खासकर पहले कुछ चक्रों में, अधिक नामांकन नहीं होते है और तब, लक्ष्य उनकी संख्या को बढ़ाना होता है जो मूल गतिविधियों में भाग लेने को इच्छुक हों। तब यह सुगठन के चरण की प्रकृति को परिभाषित करता है, जिसमें मुख्यतः जिज्ञासुओं की रुचि को सम्पोषित करना और उनकी आध्यात्मिक खोज में तब तक उनके साथ चलना शामिल होता है जब तक अपनी आस्था में वे सम्पुष्ट नहीं हो जाते। जिस हद तक इन उपायों का सशक्त रूप से अनुसरण किया जाता, उस अनुपात में यह चरण काफी संख्या में नामांकन उत्पन्न कर सकता है। फिर भी, इस पर ध्यान देना होगा कि जैसे-जैसे सीखने की प्रक्रिया आगे बढ़ती जाती है और अनुभव प्राप्त होते जाते हैं, वैसे-वैसे न केवल जिज्ञासु आत्माओं का शिक्षण करने, बल्कि सामान्य जनसमूह में से अधिक ग्राही खण्डों की पहचान कर पाने की योग्यता भी विकसित होती जाती है और एक चक्र से दूसरे चक्र में नये अनुयायियों की कुल संख्या में बढ़ोत्तरी होती है।

क्लस्टर की कुछ भी प्रकृति हो, यह आवश्यक है कि सर्वत्र बच्चों और किशोरों पर निकटीय ध्यान दिया जाये। तरुण लोगों की नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा की चिन्ता मानवजाति की चेतना पर अपना जोरदार प्रभाव डाल रहा है तथा समुदाय निर्माण का कोई भी प्रयास इसे अनदेखा नहीं कर सकता। वर्तमान पाँच वर्षीय योजना के दौरान जो विशेषतौर पर स्पष्ट हुआ है वह है किशोरों के आध्यात्मिक सशक्तिकरण को लक्ष्य बनाकर चलाये गये शिक्षाप्रद कार्यक्रमों की प्रभावोत्पादकता। जब उनकी आध्यात्मिक दृष्टि को बढ़ाने वाले कार्यक्रम में तीन सालों तक उनका साथ दिया जाता है और पंद्रह वर्ष के होने पर संस्थान पाठ्यक्रमों की मुख्य कड़ी में प्रवेश करने के लिये उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है, तब वे ऊर्जा और प्रतिभा के एक ऐसे विशाल भण्डार का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसे आध्यात्मिक और भौतिक सभ्यता के विकास के लिये समर्पित किया जा सकता है। अब तक प्राप्त किये जा चुके परिणामों से हम इतने प्रभावित हैं और इसकी आवश्यकता इतना अप्रतिराध्य है कि हम सभी राष्ट्रीय सभाओं से आग्रह करेंगे कि वे अपने प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा चलाये गये कार्यक्रमों द्वारा गठित किशोर समूहों को अपने में एक चैथी मूल गतिविधि के रूप में मान्यता दें और इसके बड़े पैमाने पर गुणनात्मक वृद्धि को बढ़ावा दें।

विकास के एक सघन कार्यक्रम की प्रगति की कुंजी वह चरण है जो समीक्षा को समर्पित होता है, जिसमें पहल द्वारा सीखे गये पाठों का स्पष्टतापूर्वक बखान किया जाता है और उन्हें गतिविधियों के अगले चक्र की योजनाओं में शामिल किया जाता है। इसकी प्रमुख विशेषता समीक्षा

बैठक होती है -- जो उतना ही आनन्ददायक उत्सव का समय होता है जितना गम्भीर परामर्श का। जटिल और विस्तृत प्रस्तुतियों के स्थान पर प्रतिभागितापूर्ण चर्चाओं द्वारा अनुभव का ध्यानपूर्वक विश्लेषण से, संकल्पना की एकता को बनाये रखने, विचार की स्पष्टता को प्रखर बनाने और उत्साह को बढ़ाने में योगदान मिलता है। अगले चरण के लिए अपनाये जाने वाले लक्ष्यों को सुझाते हुए आवश्यक सांख्यिकीय की समीक्षा इस विश्लेषण की केन्द्रीय विशेषता है। ऐसी योजनाएँ बनायी जाती हैं जिनमें एक ओर, विकास चक्र के समापन पर विभिन्न कार्यों को करने के लिये उपलब्ध मानव संसाधनों के रूप में बढ़ी हुई क्षमता को और दूसरी ओर, जनसमूह की ग्रहणशीलता तथा शिक्षण की गतिशीलता के प्राप्त ज्ञान को ध्यान में रखा जाता है। जब एक चक्र से दूसरे चक्र में समग्र बहाई आबादी में बढ़ोतरी के अनुपात में मानव संसाधनों में वृद्धि होती है, तब विकास को न केवल बनाया रखा जा सकता बल्कि उसे त्वरित भी किया जा सकता है।

1,500 ऐसे सघन कार्यक्रमों की स्थापना के महत्वाकांक्षी लक्ष्य को पाने के लिये, बहाई विश्व को पिछले दस सालों के दौरान प्राप्त अनुभव और निर्मित क्षमता को खुलकर प्रयोग में लाना चाहिए। पवित्र भूमि से आपके प्रस्थान के बाद आपको राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं और क्षेत्रीय परिषदों के साथ गहन परामर्श करते हुऐ एक साथ मिलकर प्रत्येक राष्ट्रीय समुदाय की परिस्थितियों का ध्यान से मूल्याँकन करना होगा ताकि वैसे क्लस्टरों की पहचान की जा सके जिन पर ध्यान केन्द्रित किया जायेगा और उनके लिए कार्ययोजनाओं का खाका खींचना होगा।

रिज़वान 2006 के तुरंत बाद इन योजनाओं को आरम्भ किया जाना होगा। क्लस्टरों को विकास के एक चरण से दूसरे चरण तक ले जाने का अनुभव अब इतना व्यापक हो चुका है कि कार्यप्रणालियों और उपकरणों को अच्छी तरह से समझा जा रहा है। संस्थान प्रक्रिया को मजबूत किया जाना होगा ताकि लोगों की एक अच्छी संख्या पाठ्यक्रमों की मुख्य श्रृंखला से होकर गुज़रती जाये। इस संदर्भ में ऐसे सघन संस्थान अभियान महत्वपूर्ण होंगे जो अभ्यास के भाग पर पर्याप्त ध्यान देते हों। मूल क्रियाकलापों की संख्या में निरन्तर गुणनात्मक वृद्धि की जानी चाहिये और व्यापक समुदाय तक पहुँचने के प्रयासों को एक प्रणालीबद्ध तरीके से आगे बढ़ाया जाना चाहिये। समय-समय पर समीक्षा बैठकों का आयोजन किया जाना चाहिये ताकि प्रगति पर नज़र रखी जा सके, विचारों की एकता बनी रहे और मित्रों की ऊर्जाओं का उपयोग किया जा सके। परिस्थितियों की आवश्यकतानुसार, विकास-प्रक्रिया की प्रशासनिक योजनाओं को धीरे-धीरे लागू किया जाना चाहिये। आने वाले वर्षों में एक ओर क्लस्टर के स्तर पर विकास को बनाये रखने की क्षमता सर्वाधिक ध्यान का विषय बनी रहेगी, तो दूसरी ओर कार्य-क्षेत्र से होकर ऊपर तक और ऊपर से कार्य-क्षेत्र तक सूचना और संसाधनों के प्रवाह को सुगम बनाने वाले क्षेत्रीय व राष्ट्रीय संरचनाओं के हो रहे विकास को भी नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता।

समान रूप से महत्वपूर्ण होगा किसी क्लस्टर को पायनीयरों के अन्तर्वाह द्वारा प्रदान किया गया समर्थन। पायनीयर के रूप में सेवा देने की इच्छा अनुयायी के हृदय की गहराई में दिव्य आह्वानों की अनुक्रिया के तौर पर सहज ही जगती है। जो कोई भी प्रभुधर्म का शिक्षण करने के उद्देश्य से अपना घर-बार त्याग देता है, वह उन उत्कृष्ट आत्माओं की श्रेणी में आ खड़ा होता है जिनकी उपलब्धियाँ दशकों से बहाई पायनीयरिंग के इतिहास को प्रकाशित करती चली आई हैं। हम आशा करते हैं कि अगली योजना में यह सराहनीय सेवा प्रदान करने हेतु अनेकों अनुयायी उठ खड़े होने के लिए प्रेरित होंगे, चाहे स्वदेश में या फिर अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में -- एक ऐसी सेवा जो स्वयं में अनकहे आशीष आकर्षित करती है। दूसरी ओर, संस्थाओं को यह विवेकपूर्ण निर्णय लेने होंगे कि ऐसे मित्रों को अनुकूल स्थानों पर भेजा जाये। लघु अवधि और दीर्घकालीन सेवा के लिये पायनीयरों को ऐसे क्लस्टरों में बसाने की प्राथमिकता दी जानी चाहिये जो प्रणालीबद्ध पहल के लिए ध्यान के केन्द्र बने हुए हैं, चाहे त्वरित विकास के लिये आधार तैयार करने के प्रयासों को प्रबलित करने के साधन के तौर पर अथवा चलाये जा रहे गतिविधियों के चक्रों को स्थिरता प्रदान करने के लिये। यह सोचना अतार्किक नहीं होगा कि मजबूत आधार प्रदान करने के लिये किया गया सम्मिलित प्रयास अन्ततः ऐसे क्लस्टरों में से पायनीयरों का उन स्थानों की ओर बाहिर्वाह का कारण बनेगा जो भविष्य की विजयों के मंच बनने के लिये नियत हैं।

प्रिय मित्रगण: अनुयायियों को प्रस्तुत चुनौतियों का सामना करने हेतु उठ खड़े होने के लिए आने वाले हफ्तों और महीनों में और योजना की अवधि के दौरान आप और आपके सहायकगण सतत् प्रेरणा के स्रोत बने रहेंगे। हम चाहते हैं कि उनकी राह में अपरिहार्य रूप से आने वाली बाधाओं को दूर करने की उनकी क्षमता में हमारे विश्वास को उन तक पहुँचाने के हर अवसर का लाभ आप उठाएँ। बहाउल्लाह की सतत् अनुकम्पा से पिछले दशक के दौरान उन्होंने जो कुछ हासिल किया है, उसकी व्याप्ति को पहचान पाने में उन्हें विफल नहीं होना चाहिए। पहले चार वर्षों की अवधि में उन्होंने अनुयायियों के बढ़ते हुए सैन्यसमूह को आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करने के लिये पूरी धरती पर संस्थागत क्षमता का निर्माण किया। इस उपलब्धि को आधार बना कर वे सीखने की एक कठिन प्रक्रिया से जुड़े रहे, जिसने उनके समक्ष महान लेकिन पाई जा सकने वाली सम्भावनाओं के द्वार खोल दिये। पिछले पाँच वर्षों के दौरान बहाई विश्व द्वारा भक्तिपरक बैठकों की संख्या में छः गुणा वृद्धि की पाई गयी सफलता, इसी अवधी में बच्चों और किशोरों के लिये आयोजित की जाने वाली कक्षाओं में हुए तीन गुणा वृद्धि और पूरी दुनिया में अध्ययनवृत कक्षाओं का ग्यारह हज़ार के आंकड़े को पार करना -- ये सब उस असाधारण शक्ति की मात्रा के अंश को ही दर्शाते हैं जिसे उन्हें सौंपी गई जिम्मेदारियों को उठा पाने के लिए अनुयायी प्रयोग में ला सकते हैं।

इन सबसे परे, मित्रों को बराबर उन आध्यात्मिक ताकतों के परिमाण के प्रति सचेत रहना चाहिये जो उन्हें उपलब्ध है। वे एक ऐसे समुदाय के सदस्य हैं, "जिसके विश्वव्यापी, लगातार दृढ़ हो रहे क्रियाकलाप एक ऐसी दुनिया में एकीकरण की प्रक्रिया का ताना-बाना बुन रहे हैं, जिसकी संस्थाएँ, धर्मनिरपेक्ष हों अथवा धार्मिक, अधिकांशतः मिटती जा रही हैं।" दुनिया के सभी लोगों में, "झंझावातों में डूबी इस युग में केवल वे ही दिव्य मुक्तिदाता की भुजा को पहचान सकते हैं जो इसकी दिशा को सुनिश्चित करता है तथा इसके भाग्य का निर्धारण करता है। केवल वे ही उस व्यवस्थित विश्व व्यवस्था क चुपचाप हो रहे विकास के प्रति सचेत हैं, जिसका ताना-बाना वे खुद बुन रहे हैं।" यह उनकी संस्थाएँ हैं जो, "युग के प्रमाणक और गौरव के रूप में जानी जाएँगी", जिसकी स्थापना के लिये उनका आह्वान किया गया है। जिस "निर्माण प्रक्रिया" के लिये वे समर्पित हैं, वह "एक रोगग्रस्त समाज की एकमात्र आशा है", क्योंकि, यह "ईश्वर के अपरिवर्तनीय उद्देश्य के उत्पादकीय प्रभाव द्वारा परिचालित है और जो उस महान के धर्म की प्रशासनिक व्यवस्था के ढाँचे में क्रमविकास कर रहा है।" और उन्हें यह याद दिलाएँ कि वे प्रकाशित आत्माएँ हैं, जिनकी परिकल्पना अब्दुल-बहा ने अपनी प्रार्थना में की है: "हे मेरे स्वामी, नायक हैं वे, उन्हें युद्धक्षेत्र में नेतृत्व प्रदान कर। वे पथप्रदर्शक हैं, उन्हें युक्तियों और प्रमाणों के साथ बोल उठने दो। देखभाल करने वाले सेवक हैं वे, दृढ़ता की मदिरा से छलछलाते प्याले को चारों ओर उन्हें प्रदान करने दे। हे मेरे ईश्वर, उन्हें ऐसे गायक बना दे जो सुन्दर बगीचों में प्रशस्ति-गीत गाते हैं, उन्हें ऐसे शेर बना दे जो जंगलों में विचरण करते हैं, उन्हें व्हेल मछलियाँ बना दे जो सागर की गहराइयों में गोते लगाती हैं।"

-विश्व न्याय मन्दिर